Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.278, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, DEC-JAN, 2022, VOL-10/49

गिजुभाई का बाल शिक्षा दर्शन

ब्रम्हा नंद मिश्र[1] & दिवाकर सिंह[2], Ph. D.

[1]शोध छात्र, शिक्षा विभाग, बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल, (म. प्र.)

[2]सह प्रोफेसर, क्राइस्ट कॉलेज, भोपाल, (म. प्र.)

Paper Received On: 25 JAN 2022

Peer Reviewed On: 31 JAN 2022

Published On: 1 FEB 2022

Abstract

प्रस्तुत शोध पत्र में गिजुभाई बधेका के शैक्षिक दर्शन का विस्तृत वर्णन किया गया है। उन्होंने आजीवन बच्चों के मनोभावों को समझने व भयमुक्त वातावरण में शिक्षा देने का समर्थन किया। वे वर्तमान शिक्षा प्रणाली से अत्यंत दुखी थे। उनका अनुभव बहुत ही कटु था, बचपन में मिली अनेक यातनाओं का उनके जीवन पर इतना अधिक प्रभाव पड़ा कि वह वकालत छोड़कर पूरी तरह से बाल शिक्षा में ही रम गए। उन्होंने अपने शिष्यों से कहा कि "मेरे छात्रों को मेरा आदेश है कि घोड़ों के अस्तबल जैसी धूल भरी इन शालाओं को जमींदोह कर दो। मार-पीट और भय दिखाने वाले कत्लखाने की नींव को बारूद से उड़ा दो, इन्हें नेस्तनाबूत कर दो"। इस प्रकार गिजुभाई बालकों की स्वतन्त्रता के प्रबल समर्थक थे। उनका विचार था कि बालकों को स्वतंत्र छोड़कर ही उन्हें अच्छी तरह से शिक्षित किया जा सकता है। वह बच्चों को किसी भी प्रकार का दंड देने के खिलाफ थे और चाहते थे कि सभी लोग बच्चों से प्रेम पूर्वक व्यवहार करें। किसी को भी अपनी इच्छों को बच्चों पर लादने का कोई अधिकार नहीं है और यदि फिर भी ऐसा किया गया तो उसके अत्यधिक घातक परिणाम आ सकते हैं। बच्चों की प्रयोगशीलता एवं सामर्थ्य क्षमता में उनका दृढ़ विश्वास था, उनका मानना था कि बच्चों का अवलोकन करते-करते ही उन्हें आत्मावलोकन का अवसर मिला है। गिजुभाई का कहना था कि "प्रतिपल मैं नन्हें बालकों में बसने वाली महान आत्मा के दर्शन करता हूँ। यह दर्शन मेरे भीतर एक प्रेरणा जगा रहा है कि बालकों के अधिकारों की स्थापना करने के लिए ही मेरा जन्म हुआ है और यही काम करते-करते मैं जिऊँ और यही काम करते-करते मेरी मृत्यु भी हो।" इस शोध पत्र में गिजुभाई की प्रमुख रचनाएं, बाल साहित्य, बाल मनोविज्ञान, बालकों के प्रति माता–पिता के कर्तव्य पर प्रकाश डाला गया है।

Scholarly Research Journal's** is licensed Based on a work at **www.srjis.com

प्रस्तावना

देश के महान बाल शिक्षाशास्त्री गिजुभाई बधेका का जन्म 15 नवंबर 1885 को गुजरात राज्य के चित्तल, सौराष्ट्र में हुआ था। इनके पिता का नाम भगवान दास जी बधेका एवं माता का नाम काशीबा देवी था। गिजुभाई के माता- पिता अत्यधिक धार्मिक विचार के थे, जिसका स्पष्ट प्रभाव गिजुभाई पर भी पड़ा। पाँच वर्ष की आयु में ही गिजुभाई पाठशाला जाने लगे, वहां उन्होंने देखा कि सभी बच्चों में मार-पीट, डांट- डपट एवं भय का साम्राज्य है। यह सब देख कर वह भी डर गए और इसी को याद करके बाद में वह अपने प्राथमिक विद्यालय के दृश्यों को शब्दों का रूप दिया। 1920 में इन्होंने बाल-मंदिर स्थापित कर बाल शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करना प्रारम्भ किया और इस क्षेत्र में अनेक नए-नए प्रयोग किए। गिजुभाई पर मारिया मांटेसरी का अत्यधिक प्रभाव पड़ा और इन्होंने

मांटेसरी शिक्षा पद्धति का गहन अध्ययन किया और पूर्णतः आत्मसात करने के बाद उनके सिद्धांतों को भारतीय परिवेश व संदर्भों में अधिकाधिक प्रभावी बनाया। भावनगर की 'दक्षिणामूर्ति बाल-मंदिर' गिजुभाई की साधना स्थली एवं शैक्षणिक प्रयोगशाला थी। यहीं पर 1916 से 1936 के बीच वे बाल-शिक्षा के विविध आयामों पर चिंतन-मनन एवं प्रयोग करते रहे।

गिजुभाई की रचनाएँ

गिजुभाई बधेका ने बहुत ही अल्प समय में एक ऐसे शैक्षिक समाज का निर्माण कर दिया कि लोग उनके द्वारा दिये गए विचारधारा को अपनाए बिना नहीं रह सकते। गिजुभाई ने अपना सम्पूर्ण जीवन बाल शिक्षा के लिए समर्पित कर दिया। वह शिक्षा से संबंधित जो भी प्रयोग अपने बच्चों पर करते उसे लिपिबद्ध भी किया करते थे। इसी प्रकार से वह धीरे-धीरे शिक्षा संबंधी साहित्यों का लेखन किया। वह एक प्रयोगवीर शिक्षक होने के साथ-साथ बाल साहित्य के प्रणेता भी थे। उन्होंने गुजराती भाषा में अनेक बाल साहित्य लिखकर सम्पूर्ण गुजरात के बच्चों को स्वाध्याय के लिए प्रेरित किया।

गिजुभाई के बाल-शिक्षण संबंधी विचार उनकी प्रमुख पुस्तकों 'दिवास्वप्न','मांटेसरी पद्धति', 'कथा-कहानी','प्राथमिक विद्यालय में भाषा शिक्षा','ऐसे हों शिक्षक', प्राथमिक विद्यालय में व्यावसायिक शिक्षा','शिक्षकों से','माता-पिता की माथापच्ची','माता-पिता से','माँ-बाप बनना कठिन है','माता-पिता के प्रश्न','बाल-शिक्षण जैसा मैंने समझा','चलते-फिरते शिक्षा' आदि अनेक रचनाओं को लिपिबद्ध किया। गिजुभाई ने अपने इन रचनाओं के द्वारा माता-पिता के कर्तव्य, बच्चों की महिमा, माता-पिता के दायित्व, उनकी चिंता, उनके प्रश्न तथा उनके अनुभवों पर विस्तृत प्रकाश डाला। अपनी लेखनी के द्वारा इस महापुरुष ने सभी के कर्तव्यों को भी विभाजित किया और बच्चों व उनके अभिभावकों के मनोविज्ञान को समझ कर सभी के लिए सुझाव भी बताने **का प्रयत्न किया।**

गिजुभाई के शैक्षिक विचारों पर सर्वाधिक प्रभाव मारिया मांटेसरी की मांटेसरी पद्धति का पड़ा। गिजुभाई ने अनेक पुस्तकों का लेखन किया और अपनी लेखनी से समाज को नई विचारधारा से परिचय कराया। इनकी एक पुस्तक 'प्राथमिक विद्यालय में भाषा शिक्षा' है जिसमें बालकों के शिक्षण विधियों जैसे- वाचन पद्धति, अनुकरण पद्धति, स्मरण पद्धति, खेल पद्धति, प्रदर्शन पद्धति जैसी अनेक विधियों का वर्णन किया गया है। 'बाल-शिक्षण जैसा मैंने समझा' नामक पुस्तक में गिजुभाई में मांटेसरी पद्धति के प्रभाव को स्पष्ट रूप से देखा व अनुभव किया जा सकता है। 'शिक्षकों से' व 'ऐसे हों शिक्षक' जैसी पुस्तकों से शिक्षकों के एक विराट रूप को दिखाने और उनके दायित्व को विभिन्न रूपों में समझाने का प्रयास किया गया है।

गिजुभाई व बाल साहित्य

समाज में समय-समय पर अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया और अपने जीवन में समाजोपयोगी कार्य करके अपनी अलग पहचान बनायी। लोक जीवन में ऐसे महापुरुषों द्वारा बताई गयी अनेक बातों, विश्वासों, परम्पराओं व अनुभवों ने जिन कहानियों व गीतों को जन्म दिया वह सभी लोगों को उनकी रुचि, आयु के अनुसार आनंद और ज्ञान प्रदान करते रहते हैं। समाज में इस प्रकार के विश्वासों, परम्पराओं व अनुभवों का जब भी

बदलाव हुआ हमेशा एक नई रचना का जन्म हुआ। इस तरह कहानियों व गीतों का बहुत विशालकाय भंडार तैयार होता रहा।

बाल साहित्य के क्षेत्र में गिजुभाई का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने अपने लेखन से समाज के सभी वर्गों को शिक्षा की दृष्टि से प्रेरित करने का प्रयास किया। वह अपनी बाल रचनाओं में बच्चों की रुचि व क्षमता का विशेष ध्यान रख, उनकी आयु व उनके विकास के अनुकूल बाल साहित्य का लेखन किया। उनके लेखन करने के पूर्व बाल साहित्य में पुरानी शैली का बोल-बाला था जिससे बच्चे पूरी तरह ऊब चुके थे। गिजुभाई ने पुरातन शैली का परित्याग कर नवीन लेखन शैली को जन्म दिया। उनका मत था कि बच्चों के लिए इस प्रकार के साहित्य होने चाहिए जो बोझिल न हों बल्कि ऐसे साहित्य हों जिनको पढ़कर बच्चे स्वयं निष्कर्ष निकाल सकें। कविता और कहानी में इतनी शक्ति होनी चाहिए कि वह बाल मन पर स्वतः प्रभाव डाले। गिजुभाई ने इस प्रकार बच्चों के मनोविज्ञान को समझ कर उनकी रुचि व प्रवृत्ति के अनुसार बाल साहित्य की रचना की।

बाल साहित्य में बाल मनोविज्ञान

मनोविज्ञान को समझे बिना किसी भी साहित्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इस बात को गिजुभाई बहुत अच्छी तरह समझते थे। इसीलिए उन्होंने बाल साहित्य के लेखन से पहले बच्चों को बहुत करीब से समझने का प्रयास किया और जब भी उन्हें समय मिलता वह बच्चों के बीच में रहते। बच्चों के मन में उठने वाले प्रश्नों को नजदीक से समझ कर उसे अपने शब्दों में लिपिबद्ध करने में गिजुभाई को महारथ हासिल थी। बालक एक कच्चे घड़े के समान होता है जिसे कुम्हार किसी भी प्रकार का आकार दे सकता है लेकिन जब घड़ा एक बार पक जाए तो उसके रूप को परिवर्तित नहीं किया जा सकता है। उसी प्रकार बालक भी जब बड़ा हो जाता है तो उसके स्वभाव व आदतों को परिवर्तित नहीं किया जा सकता। जब तक बच्चा छोटा है हम उसे अच्छे संस्कार दे कर अच्छा इंसान बना सकते हैं या फिर बुरे संस्कार देकर बुरा इंसान बना सकते हैं। अतः बच्चों के निर्मल-निश्चल स्वभाव, उनकी रुचि, आदत, प्रवृत्तियों, अपेक्षाओं एवं परिवेश की पृष्ठभूमि को बिना समझे हम किसी भी दिशा में मोड़ सकते हैं। उसके लिए केवल हमें बच्चो के मनोभावों को समझ कर उनके साथ बच्चा बन जाना पड़ेगा। तभी बच्चों को हम समझ पाएंगे और उनके अंदर अच्छे गुणों को प्रविष्ट कर पाएंगे।

बच्चे ही देश का भविष्य होते हैं। अतः बड़ों को बच्चों के करीब आकर उन्हें समझना बहुत जरूरी है इसीलिए बाल साहित्य का लेखन करने के लिए बच्चों के मनोभाव को नजदीक से समझना एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंग है। बाल साहित्य के अंदर कविता, कहानी के साथ-साथ बाल उपन्यास, बाल एकांकी, नाटक, बाल जीवनी, यात्रा वृतांत आदि अनेक विधाएँ आती हैं। बाल साहित्य की इन विधाओं द्वारा हम बच्चों के अंदर नैतिक मूल्य, देश प्रेम, प्रकृति प्रेम, पर्वों त्योहारों के प्रति रुचि व राष्ट्रीय एकता जैसे गुणों को समृद्ध किया जा सकता है। अतः इन सभी गुणों के सकारात्मक विकास के लिए एवं बालक को नागरिक बनने की दिशा में अग्रसर होने के लिए औपचारिक व अनौपचारिक रूप से बाल मनोविज्ञान को ध्यान में रखकर बाल साहित्य की रचना करना अति आवश्यक होता है।

बाल महिमा के संबंध में गिजुभाई के विचार

मानव विकास की सभी अवस्थाओं में बाल्यावस्था का प्रमुख स्थान है। बाल्यावस्था में व्यक्ति के सभी प्रकार के अच्छे -बुरे गुणों की नींव पड़ जाती है। जिस प्रकार एक बीज में पूर्ण वृक्ष समाहित होता है उसी प्रकार बालक में भी सम्पूर्ण मनुष्य समाहित होता है और बाल्यावस्था से ही मनुष्य की समस्त अवस्थाओं के विकास का क्रम आगे बढ़ता है। गिजुभाई ने बालकों की इस महत्ता को समझा व उन्हें अनेकों रूपों में देखा और समय–समय पर अपने साहित्य में स्थान दिया। बच्चों के लिए गिजुभाई के मन में बहुत ही अधिक प्रेम, आदर व सम्मान था जो साहित्य में अनेकों जगह स्पष्ट रूप से नजर आता है। जैसे- बालक प्रभु की अनमोल देन है, बालक प्रकृति की सुंदर से सुंदर कृति, मानव कुल का विश्राम, प्रेम का पैगंबर तथा समष्टि की प्रगति का एक अगला कदम है, यदि परमात्मा ने कोई निर्दोष वस्तु उत्पन्न की है तो वह बालक ही है, जिसके साथ रहकर हम निर्दोषता का अनुभव करते हैं, बालक जब खिलखिला कर हँसता है तो उसके मुंह से नन्हें-नन्हें फूल झड़ते रहते हैं जो सारे दुखों को विलीन कर देते हैं, जाड़ों की रात में जब बालक माँ की गोद में चिपक कर सोता है तो उसकी मीठी अनुभूति जो माँ को होती है, वह अद्वितीय है, बालक माँ के प्रेम के कारण जिंदा रहता है या माँ बालक के मिठास के कारण जिंदा रहती है।

बच्चा भगवान का ही एक रूप माना जाता है इसलिए बच्चों की पूजा भी की जाती है। गिजुभाई ने इस बात को अच्छी तरह समझा व अपने जीवन में उतारने का भरपूर प्रयास भी किया। यह बात गिजुभाई के उपरोक्त कथनों से स्पष्ट होती है। गिजुभाई बच्चों को बहुत ही आदर व सम्मान से देखते थे। उनके मन में बच्चों के प्रति अपार श्रद्धा थी और समय-समय पर वह इस बात को सभी से किसी न किसी रूप में साझा भी करते थे।

बालकों के प्रति माता –पिता के कर्तव्य

माँ ही बच्चे की प्रथम शिक्षिका होती है और जब बच्चा जन्म लेता है तभी से उसका ध्यान रखती है। माता-पिता ही बच्चे को सर्वप्रथम समाज से परिचित कराने का प्रयास करते हैं। गिजुभाई बच्चों के समग्र विकास के लिए माता- पिता की भूमिका को अत्यंत महत्वपूर्ण मानते थे। उनका मानना था कि बच्चे दिखने में छोटे जरूर होते हैं लेकिन उनकी आत्मा महान होती है। माता-पिता को बच्चों का सम्मान करना चाहिए, उन्हें छोटी-छोटी बातों के लिए अनावश्यक रूप से रोका या टोका नहीं जाना चाहिए। उनका कहना था कि –

"सच्चा प्रेम न तो बालकों को गहने पहनाने में है, न उनको अच्छी चीजें खिलाने-पिलाने में है और न ही कीमती कपड़े पहनाने में ही है। सच्चा प्रेम तो इस बात में है कि हम उनको उनकी रुचि के काम करने दें और इन कामों के लिए जरूरी अनुकूलताएं खड़ी कर दें।"

गिजुभाई के अनुसार माता-पिता के कर्तव्य बहुत ही व्यापक, गंभीर व संवेदनशील हैं कि उस पर बड़े-बड़े ग्रंथ लिखे जा सकते हैं। वह माता-पिता के लिए कहते हैं कि-

आज का बालक कल का आदमी है, बालकों के मन में भी अनेकों प्रकार के विचार पनपते हैं और वह बिना भविष्य की चिंता किए अपने विचारों को साकार करने की कोशिश करता है। माता-पिता को चाहिये कि वह बच्चों के मनोभाव को समझें और उसको किसी भी प्रकार की सजा देने से बचें। माता-पिता को कभी भी बच्चों में

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

प्रतिस्पर्धा की भावना को नहीं विकसित करना चाहिए। इससे बच्चे अपने मूल स्वभाव को खो देते हैं और हारने का डर व जीतने की लालसा उनके मन में हमेशा बनी रहती है। बच्चे में किसी भी प्रकार की प्रवृत्ति को जन्म देने के लिए माता-पिता को घर व समाज में वैसा ही आचरण करना चाहिए जैसा वह बच्चे से अपेक्षा करते हैं। बच्चा धीरे-धीरे स्वतः अपने माता-पिता को देखकर अपने अंदर उसी प्रकार के व्यवहार करने लगता है। इसी प्रकार से अनुकरण द्वारा धीरे-धीरे बच्चों में नैतिक गुणों का विकास हो जाता है।

गिजुभाई का बाल-दर्शन

गिजुभाई को बच्चों से अत्यधिक लगाव था उन्होंने बच्चों के लिए किसी भी प्रकार के सिद्धांत का प्रतिपादन नहीं किया। वे बच्चों को देखकर प्रफुल्लित हो उठते थे उनके मन में बच्चों के लिए बहुत ही आदर व सम्मान था। वह बच्चों की आँखों में ही देखकर उनके सपने पढ़ लेते थे। गिजुभाई का बाल दर्शन उस शिशु से प्रारम्भ होता है जो पाठशाला में आने से पूर्व घर में पलता है और जिसको माता-पिता स्नेह तो बहुत करते हैं लेकिन विभिन्न प्रकार के डर के कारण उसे स्वतंत्र नहीं छोड़ते हैं। घर से ही बच्चों को स्वतंत्रता नहीं मिलती तो उनके मन में धीरे-धीरे नकारात्मकता की भावना जगह बना लेती है। जब वह स्कूल जाते हैं तो उनके अंदर आत्मविश्वास की कमी देखी जाती है और वह किसी भी प्रकार का निर्णय करने में अपने आप को सहज नहीं पाते हैं, आत्मनिर्भरता की जगह वह अपने घर, परिवार पर ही निर्भर रहते हैं। उनके मन में हमेशा संदेह व डर बना रहता है जिससे उनका शारीरिक व मानसिक विकास बहुत ही धीरे-धीरे होता है।

संदर्भ सूची

अल्तेकर, अ. स. (1980). प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति. वाराणसी : नन्द किशोर एण्ड ब्रदर्स.
गांधी, महात्मा (2014). बुनियादी शिक्षा. वाराणसी : सर्व सेवा संघ प्रकाशन.
गुप्ता, निर्मला (2007). प्राथमिक विद्यालय के विशेष संदर्भ में गिजुभाई के शैक्षिक के सामर्थ्य का अध्ययन. परिप्रेक्ष्य, न्यूपा, वर्ष-14, अंक 3 दिसंबर
गोसालिया, दिव्या(2004). गिजुभाई के शैक्षिक दर्शन. परिप्रेक्ष्य न्यूपा, वर्ष-11, अंक-2, अगस्त
त्यागी, गु. दा. (2012). उदीयमान भारत में शिक्षा. आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन.
पाण्डेय, रा. स. (2010). उदयीमान भारतीय समाज में शिक्षक. आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन.
पाण्डेय, रा. स. (2014). शिक्षा के दार्शनिक सिद्धान्त. आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन.
पाठक, पी. डी. (2009). भारतीय शिक्षा एवं उनकी समस्याएँ. आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन.
बधेका, गीजुभाई (1991). दिवास्वप्न. नई दिल्ली : नेशनल बुक ट्रस्ट.
बधेका, गिजुभाई (2012). प्राथमिक शिक्षा में कला-कारीगरी की शिक्षा. बीकानेर : सर्जना प्रकाशन.
बधेका, गिजुभाई (2012). प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक और शिक्षण पद्धतियाँ. बीकानेर : सर्जना प्रकाशन.
बधेका, गिजुभाई (2007). बाल शिक्षण जैसा मैंने समझा. जयपुर : अंकित प्रकाशन.
बधेका, गिजुभाई (2008). चलते-फिरते. बीकानेर : सर्जना प्रकाशन.
मुखर्जी, र. ना. (2006). भारतीय समाज एवं संस्कृति. दिल्ली : विवेक प्रकाशन.
लाल, र. बी. (2011). शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार. मेरठ : रस्तोगी पब्लिकेशन.
वर्मा, न. (2012). विश्व के महान शिक्षा शास्त्री. नई दिल्ली : ओमेगा पब्लिकेशन्स.
विनोबा,(2011). गाँव-गाँव में स्वराज. वाराणसी : सर्व सेवा संघ प्रकाशन.

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language